एक्सपर्ट बोले- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी कभी इंसान की जगह नहीं ले सकती

आइआइएम का डिजिटल कॉन्फ्रेंस शुरू

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

रायपुर ◆आज के दौर में यह बात सुनने में आ रही है कि एआइ यानि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस किसी व्यक्ति का ऑप्शन हो सकती है। ये भ्रम है जिसे बिना किसी ठोस आधार पर फैलाया जा रहा है।

यह बातें आइआइएम के डिजिटल अर्थव्यवस्था पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर प्रो. लक्ष्मी अय्यर, अप्पलाचियन स्टेट यूनिवर्सिटी, संजय बोबड़े, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्मार्ट गवर्नेंस, रोहित बंसल, ग्रुप हेड ऑफ कम., रिलायंस

इंडस्ट्रीज लिमिटेड और डॉ. दिवाकर बी. कामथ, एसोसिएट डायरेक्टर, आइबीएम इंडिया प्रा. लिमिटेड ने अपने-अपने तर्कों से सिद्ध की। उन्होंने बताया कि एआइ एक शिक्षा आधारित विधि है, और इसे अनुभवों के माध्यम से सीखा जाता है। ये अनुभव हमेशा उस अनुभवात्मक सीख से परे होंगे जो मानवों ने सामूहिक रूप से वर्षों में हासिल किए हैं। इसके बावजूद, एआइ क्रांति नए और उभरते अवसरों जैसे कि स्मार्ट सिटी एप्लिकेशन्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, सोशल मीडिया, मोबाइल ऐप, जैसे अन्य स्रोतों को लाई है। उपरोक्त सभी ने नई प्रशासनिक संरचनाओं का उदय किया है जो भविष्य में एक बार परिष्कृत होने के बाद सामूहिक रूप से लाभकारी सिद्ध होंगी। प्रो. सुमीत गुप्ता, सम्मेलन के सह अध्यक्ष, आइआइएम रप्रो. भारत भास्कर, सम्मेलन के अध्यक्ष और निदेशक, आइआइएम प्रो. सौरेन पाल, नोवा साउथइस्टर्न यूनिवर्सिअी और संजय बोबड़े, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्मार्ट गवर्नेंस ने सम्मेलन के उद्देश्य के बारे में विस्तार से बात की, जो कि शिक्षाविदों और उद्योग कर्मियों के बीच एक सहयोगी और व्यापक पुल स्थापित करना था। सम्मेलन में तेजी से बढ़ रही डिजिटल दुनिया में जी रहे हैं, उस पर बात की गई।

चर्चा का एक और प्रमुख बिंदु यह था कि जीवन का तरीका कितना विघटनकारी हैं और केवल अलग तरीके से सोचने से ही नए रास्ते खुल सकते हैं। छोटी छोटी गलतियों के द्वारा ही धीरे-धीरे नए परिवर्तन लागू किए जा सकते हैं। संबोधन का सामान्य विषय यह था कि डिजिटल युग का आगमन भारत के लिए विचार-आधारित मूल्य निर्माण के माध्यम से आगे बढ़ने का एक शानदार अवसर था।

Patrika, 9th Feb 2019, P.15